|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
|

|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
|

|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
|

|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
|

|  |  |
| --- | --- |
| № 1/9-470 від 18.07.09 На № \_\_\_\_\_\_\_\_ від \_\_\_\_\_\_\_\_\_ |   |
|   | Міністерство освіти і науки Автономної Республіки Крим, управління освіти і науки обласних, Київської та Севастопольської міських державних адміністрацій |

  Міністерство освіти і науки України надсилає для практичного використання методичні рекомендації „Підбір і використання іграшок для дітей дошкільного віку в дошкільних навчальних закладах”.   Просимо довести їх зміст до відома керівників та педагогічних працівників дошкільних навчальних закладів.   Додаток: на 14 арк.

|  |  |
| --- | --- |
| Заступник Міністра | П.Б. Полянський |
|   |  |  |

Гладун Л.В. 253-54-00 Курочка Н.М. 288-04-26

|  |  |
| --- | --- |
|   | Додаток до листаМіністерства освіти і науки Українивід 18.07.2008 № 1/9-470 |

**Підбір і використання іграшок для дітейдошкільного віку у дошкільному навчальному закладі**Організація предметного середовища у дошкільному навчальному закладі повинна відповідати завданням фізичного і психологічного благополуччя дошкільника.   Базова програма розвитку дитини дошкільного віку "Я у світі" визначає основні вимоги до його облаштування, а саме: різноманітність, варіативність, доступність для ознайомлення та використання іграшок, предметів, фізкультурного обладнання тощо.   Однією із важливих складових предметного середовища є іграшки, що створюють оптимальні умови для зростання практично умілого, вправного у взаємодії з предметним світом дошкільника.   Розмаїття іграшок вимагає від дорослих, педагогів та батьків, виваженого підходу до їх підбору. Матеріали для гри повинні створювати оптимально наповнене (без надлишку і недостачі) цілісне ігрове оточення, безпечне і комфортне для дитини.    Створення педагогічно доцільної системи іграшок неможливе без врахування вікового принципу та принципу діяльності. З одного боку, властивості та якості іграшок повинні бути близькими і зрозумілими дитині певного віку, з іншого - кожна іграшка у взаємодії з системою іграшок в цілому, повинна сприяти виникненню ігрових цілей та способів дії, притаманних наступному, вищому етапові розвитку ігрової діяльності (за Л.С. Виготським – зона найближчого розвитку). Необхідно враховувати інші аспекти педагогічної класифікації іграшок, відповідно до якої іграшки розрізняють за: - ступенем готовності (готові, збірно-розбірні, напівфабрикати, матеріали для виготовлення іграшок-саморобок);   - матеріалом (іграшки з деревини, тканини та хутра, паперу, гуми,    пластмаси, металу та інших матеріалів);   - розміром (дрібні (до 10см), середні (співрозмірні руці дитина),    великогабаритні (від 35 см));   - за художньо-образним рішенням (умовні, прототипові, реалістичні); Наказом Міністерства освіти і науки України від 11.09.2002 № 509 затверджено Типовий перелік обов’язкового обладнання, навчально-наочних посібників та іграшок у дошкільних навчальних закладах, який пропонує загальну схему підбору іграшок за видами, а також їх орієнтовну кількість на групу дітей. Методичними рекомендаціями від 17.03.2006 № 1/9 - 153 „Підбір і використання іграшок для дітей раннього віку у дошкільних навчальних закладах” запропоновано асортимент іграшок для дітей 2-го та 3-го року життя, який повинен забезпечувати удосконалення сенсорного досвіду малюків, підготувати їх до засвоєння сенсорних еталонів, розуміння призначення предметів, засвоєння способу дії з ними, виховання культури взаємодії з ігровими партнерами як передумови виникнення сюжетно-рольової гри.   Дошкільний вік знаменується становленням та розвитком сюжетно-рольової гри, яка є провідним видом діяльності в цьому віці. Моделюючи відносини у світі дорослих, діти засвоюють завдання, мотиви і норми існування „дорослого” світу. Дошкільники оволодівають рольовою поведінкою, відображаючи взаємовідносини людей з найближчого оточення. Розширене коло знань конкретного та більш загального характеру, розмаїття вражень від навколишнього світу, багатший порівняно з раннім віком особистий досвід дитини потребує ширшого асортименту іграшок. Кількість однакових або подібних іграшок зменшується, оскільки діти поступово оволодівають спільними сюжетно-рольовими іграми.   В молодшому дошкільному віці іграшка спочатку є підказкою, „пусковим механізмом” ігрового сюжету. Спостерігається досить помітна залежність дитини 3-4 років від запропонованого дорослим ігрового оточення. Для розгортання сюжету молодші дошкільники потребують всієї сукупності сюжетних іграшок, що задають ігрову ситуацію. Це іграшки, які вказують на місце події (будиночки, кухонне обладнання тощо), на ігрових персонажів (ляльки, фігурки, ігрові костюми або інші специфічні атрибути, наприклад, халат лікаря), а також іграшки, що імітують засоби людської діяльності (праска, посуд, інструменти тощо).   Спостерігається тенденція до зменшення розміру іграшок. Проте ігрові предмети, пристосовані до зросту та ваги дітей, не втрачають своєї актуальності.   Старші дошкільники, розігруючи складні сюжети, розгортаючи режисерські ігри, є менш залежними від предметно-ігрового оточення, від тих чи інших іграшок. Ігрові дії набувають узагальненості, стають більш згорнутими, відбувається перехід до внутрішнього або мовного плану дій („малюнка дії”). Іграшки відіграють роль стимулу, підтримки одного чи декількох компонентів ігрової ситуації, служать для актуалізації життєвого досвіду дітей, який негайно задіюється у грі.   Старші дошкільники потребують, з одного боку, реалістичних, досконалих іграшок, що максимально передають ознаки та властивості прототипу. Вони реалізують потяг дітей 5-6 років до „справжніх” предметів. З іншого боку, високий рівень розвитку творчої гри, необхідність подальшої активізації фантазії дитини вимагає наявності максимально умовних іграшок. Педагогічно цінними в цьому контексті є ігрові модулі, великогабаритні набори будівельних матеріалів. Такі іграшки та ігрове обладнання стають сюжетними, починають „працювати” на ігровий задум після творчого втручання дитини, намагання максимально задіяти ігровий простір для відображення уявної ігрової ситуації.   Пропонуємо рекомендації щодо підбору та використання іграшок окремих видів.   **Ляльки. Фігурки людей та тварин**.   Цей вид іграшок традиційно відносять до образних або іграшок-персонажів. Саме вони є головними у виникненні ігрового задуму, розгортанні сюжету. Молодші дошкільники потребують ляльок середнього розміру, з реалістичною передачею образу (немовлята, однолітки, дорослі). Здебільшого у своїх іграх з лялькою молодші дошкільники перевтілюються у дорослих з їх найближчого оточення (батьків або вихователів), а іграшку ототожнюють із собою. Переважають побутові сюжети. Відповідно у своїй конструкції та зовнішніх характеристиках лялька для молодших дошкільників повинна бути максимально функціональною, з рухливими руками та ногами, зручною для купання та переодягання, з придатною для розчісування перукою, рухливими очима. Також для цього віку корисні прототипні (такі, що передають основні характеристики прототипу) іграшки-персонажі відомих казок, мультфільмів, дитячих телевізійних передач.   Велике значення в молодшому дошкільному віці мають м’яконабивні іграшки, що стають предметом піклування дитини і часто замінюють ляльку (котики, собачки та інші знайомі тварини). Вони мають бути функціональними, з рухливим шарніруванням, що дає можливість їх посадити, покласти спати, сповити та ін. Ляльки та фігурки можуть бути обладнані спеціальними пристроями (заводні, такі, що ходять, розмовляють, танцюють тощо).   Діти цього віку використовують готові іграшки, окремо та в наборах (домашні та дикі тварини, їх дитинчата). Матеріалом для виготовлення ляльок та фігурок можуть бути пластмаса, гума, деревина, тканина, штучне хутро. Хоча діти молодшого дошкільного віку менш схильні до „знайомства” з іграшками за допомогою рота, вимоги до санітарно-гігієнічної обробки, спосіб якої обов’язково має бути вказаний на етикетці, залишаються жорсткими. Використання сучасних матеріалів для виготовлення м’яконабивних іграшок дозволяє без шкоди для зовнішнього вигляду прати їх у пральних машинах.   В старшому дошкільному віці образні іграшки виступають у двох виглядах. З одного боку, вони стають все більш реалістичними, деталізованими. З іншого, великого значення набувають іграшки з „крайнім полюсом” умовності. Останні набувають характерних ознак, рис в процесі гри, в уяві дитини і дають безмежні можливості для розвитку фантазії старших дошкільників.   На етапі формування режисерських ігор діти прагнуть мати не окремі іграшки, а сюжетні та тематичні набори. Як приклад, Барбі з ігровими аксесуарами, набори динозаврів, роботів тощо, розмір яких дрібний, придатний для розгортання режисерських ігор.   **Предмети лялькового вжитку.**   До цього виду іграшок відносять посуд, меблі, побутову техніку та засоби зв’язку, одяг та постільну білизну. Найголовніша вимога до цих предметів – співрозмірність з лялькою, що є ігровим центром..   Для молодших дошкільників необхідно підбирати іграшки з окремими функціональними елементами: дверцятами, що відкриваються, ручками та кнопками, що повертаються, вмикаються тощо.   Старші дошкільники включають до гри широке коло побутових приладів, які спостерігають у реальному житті (пилососи, фени, мікрохвильові печі, пральні машини та інше). Особливо цінним для дітей цього віку є іграшки, що дозволяють виконати дію, максимально наближену до реальної, а не просто її імітацію. Прикладом є швейна машинка, що справді шиє, дозволяє „швачці” одягнути ляльку. Такі іграшки поєднують гру з результативною практичною діяльністю.   Іграшки можуть бути виготовлені з різноманітних матеріалів, в тому числі з порцеляни. Крім готових, діти використовують збірно-розбірні іграшки, а в старшому дошкільному віці – набори напівфабрикатів і заготовок для виготовлення атрибутів для сюжетно-рольових ігор.   **Транспорт. Техніка. Споруди. Інструмент імітаційний.**   У дошкільному віці асортимент іграшок цього виду значно розширюється.   Молодші дошкільники потребують іграшкових автомобілів знайомих марок, окремі види будівельної та сільськогосподарської техніки (підйомний кран, екскаватор, трактор). Розмір іграшок середній. Конструкція техніки має бути такою, що дозволяє дитині піднімати кузов або вантаж, крутити, насипати, котити. Технічні іграшки можуть бути обладнані заводним або інерційним механізмом. Діти цього віку охоче граються технікою великого розміру. Бажано мати пару таких іграшок, об’єднаних тематично (наприклад, вантажівка і підйомний кран). Граючись з ними, діти будують простий ланцюжок ігрових дій (навантажити, перевезти, розвантажити тощо). Виникненню спільних ігор з однолітками сприяє використання ігрової атрибутики, наприклад, жезла регулювальника дорожньо-транспортного руху.   Діти старшого дошкільного віку потребують більш складних за конструкцією і механізмами дії іграшок. Добре, якщо в технічних іграшках є зрозумілим їх устрій, принцип дії. Діти 5 років потребують пневматичних, електронних, із запрограмованими діями іграшок. Особливу зацікавленість вони виявляють до складних технічних ігор типу „Автоперегони”, „Велотрек”, електрифікованої залізниці, діючих збірних моделей типу „Lego”, а також тематичних наборів „Аеропорт”, „Залізниця”, „Річковий порт”.   Слід зазначити, що в старшому дошкільному віці функцію транспорту або споруд можуть виконувати ігрові поліфункціональні модулі, елементи великогабаритного конструктора, а також предмети, що не є іграшками: стільці, диванні подушки тощо.   Розвитку режисерських ігор сприяють іграшки-макети. За визначенням Н.О. Короткової, це предмети, що є зменшеними копіями реальних споруд (будинків, замків), а також іграшки, що моделюють міський та природний ландшафт.   **Іграшки для ігор з піском, водою та снігом**   Цей вид іграшок дозволяє удосконалити чуттєвий досвід дітей і практично пізнати властивості різноманітних матеріалів. Наявність пісочних наборів з лопатками, граблями, ситечками, різноманітними формами є актуальною протягом усього дошкільного дитинства. У молодшому дошкільному віці складові наборів мають бути співрозмірними руці дитини. Старші дошкільники використовують пісочні набори більшого розміру. Збагаченню сюжетів ігор з піском, водою та снігом допомагає використання іграшок інших видів: будівельних наборів, техніки, споруд, іграшок-саморобок для води, різноманітних фігурок. Для старших дошкільників пропонують набори для дослідів з природнім матеріалом та різноманітні гідроспоруди.   **Настільні ігри**   Ці ігри посідають особливе місце в системі засобів педагогічного впливу на дитину. Більшість ігор для дітей дошкільного віку побудовані на малюнках, що дають зображення предметів і явищ навколишньої дійсності дещо ізольовано, підкреслюючи їх характерні риси. Малюнок робить їх більш доступнішими, чіткішими, зрозумілішими дітям. Можливість вільного багаторазового розглядання малюнків допомагає усвідомити, згадати враження з навколишньої дійсності.   Крім обсягу знань, які закладено у зміст настільних ігор, цей вид іграшок значною мірою впливає на художній і емоційний розвиток дітей, сприяє вихованню навичок організованої поведінки, привчає виконувати правила, вміти долати програш.   Проте, настільні ігри мають педагогічний вплив лише тоді, коли відповідають обсягу знань дитини, а ігровий принцип, закладений в основу тієї чи іншої гри, доступний дітям певної вікової групи. Всі ігри поділити на шість груп:   1) ігри на порівняння, тотожність , об’єднання, класифікацію предметів (лото, доміно, парні картинки, квартети);   2) ігри на складання, конструювання, збирання предметів з окремих частин (розрізні картинки, мозаїки);   3) ігри розважально-пізнавального плану з маршрутом (маршрутні ігри);   4) ігри на розвиток комбінаторних здібностей, логічного мислення (шахово-шашкові ігри);   5) ігри на розвиток дрібної моторики, координації рухів, окоміру (див. розділ „Спортивно-моторні іграшки);   6) ігри на допомогу у навчанні (вікторини, абетки на кубиках).   Зміст парних картинок для дітей певного віку диференціюється таким чином: для молодших дошкільників – це предмети найближчого оточення (одяг, посуд, іграшки, рослини, тварини, деякі соціальні явища (свята, праця людей). Для старших дошкільників – це класифікація предметів за певними ознаками, предмети в різних ситуаціях, тотожні за кольором або подібністю дій. Залежно від віку дітей парні картини можна давати з певним ускладненням: підшукати картинку за зразком, за допомогою зорової пам’яті, за назвою. Подібні завдання ставляться і під час гри у лото. У цій грі предмети об’єднуються за певною ознакою. Для молодших дошкільників на великих картинках повинно бути зображено не більше 4-х предметів. У старшому дошкільному віці використовують лото з різною композицією малюнків, ширшою тематикою.   У розрізних картинках особливе значення приділяється зображенню окремого предмета або сюжету. Для дітей молодшого дошкільного віку – це зображення окремих предметів на нейтральному тлі. Воно повинно бути чітким з виявом характерних ознак зображеного. Для старших дошкільників сюжети малюнків можуть бути досить складними (сюжети казок, оповідань, мультфільмів), розрізи зроблені по діагоналі, а також фігурні.   Маршрутні ігри варто пропонувати дітям починаючи з 4,5 – 5 років. Сюжет гри повинен бути знайомий дітям (пригоди улюблених героїв, пригоди персонажів, цирк тощо). Ігри для старших дошкільників ускладнюються як за сюжетом, так і за ігровими діями. Гравцям доводиться обирати найкращі маршрути до фінішу, аналізувати свої дії, передбачати хід гри.   Ігри шахово-шашкового типу найскладніші для дітей дошкільного віку, побудовані на складних правилах, що регулюють хід фігур. Такі ігри вимагають від дитини великої зосередженості, вміння діяти за діями партнерів, будувати план гри, передбачати дію суперника, тримати всі фігури в полі зору. Завдяки такій специфіці шахово-шашкові ігри доступні лише старшим дошкільникам.   **Сенсорні іграшки**   Цей вид іграшок в молодшому дошкільному віці сприяє подальшому формуванню уявлень про кольори та їх відтінки, форми, співвідношення величин і засвоєння відповідних назв, а також розвитку окоміру. Крім будівельних наборів (див. розділ „Будівельно-конструктивна іграшка”), молодшим дошкільникам пропонують різнокольорові піраміди з поступовим зменшенням діаметру кілець (від 5 кілець), багатостержньові піраміди з насадками однієї форми та кольору на стержень (на кожному – інші); піраміди з поєднанням кольорів та їх відтінків (по 2 відтінки кожного кольору); вкладинки різної величини, іграшки типу мотрійок, намисто для нанизування з порівняно великими деталями, геометричні та силуетні лото.    В старшому дошкільному віці необхідно ускладнити завдання на аналіз кольору, форми, величини. Дітям цього віку потрібні однокольорові піраміди з кільцями різних відтінків за світлотою , тематичні однокольорові піраміди з більшою кількістю кілець (від 10 кілець); піраміди з тонкою градацією відтінків кольору; багатостержньові піраміди зі складними різновидами однієї і тієї ж форми, циліндри-вкладинки з 10-и елементів різної висоти, різнокольорові механічні та ручні дзиґи, лото „Колір і форма”, калейдоскопи. Іграшки для нанизування стають сюжетними і пропонуються у вигляді наборів для творчості (наприклад „Намисто для ляльки”).   Для розвитку сенсомоторики (узгоджених дій руки і очей), розвитку дрібних м’язів руки, сприйняття кольору, закріплення уявлення про властивості предметів та їх положення у просторі особливо цінними є різні види мозаїк. Молодшим дошкільникам пропонують геометричні площинні мозаїки, а також круглі (кнопочні) мозаїки з порівняно великими елементами. Дітям старшого дошкільного віку пропонують геометричну мозаїку з різними кольоровими та розмірними поєднаннями форм, круглу мозаїку з дрібними елементами, фігурну мозаїку з полями-підкладками різної форми, а також орнаментальну мозаїку.   Перелік іграшок, що сприяють вихованню сенсорної культури дітей насправді набагато ширший, оскільки всі різнокольорові, озвучені, музичні іграшки так чи інакше формують уявлення дітей про властивості предметів, удосконалюють діяльність органів чуття. В цьому контексті важливо підбирати іграшки приємних, чистих, яскравих, гармонійно поєднаних кольорів, з приємним звучанням, виготовлених з матеріалів різної фактури.   **Спортивно-моторні іграшки**   У молодшому дошкільному віці спортивні іграшки призначені для подальшого розвитку рухів дітей, стимулювання загальної рухової активності, бажання брати участь у рухливих іграх та фізичних вправах разом з дорослими та іншими дітьми.   Для спортивних ігор пропонуються м’ячі середнього та великого розміру, оскільки впіймати руками маленький м’яч дитині цього віку важко через відсутність чіткої координації рухів. Молодшим дошкільникам для розвитку основних груп м’язів необхідні різноманітні вітрячки, обручі, педальні машини, трьохколісні велосипеди. Для тренування вестибулярного апарату необхідні гойдалки, коники-гойдалки. Іграшками, що допомагають дитині вжитися в образ, відобразити певну роль, є елементи костюмів для рухливих ігор („Зайці і вовк” , „Жабки і журавлі” тощо).   У старшому дошкільному віці необхідно розвивати координацію рухів, дрібну моторику рук. Група спортивних іграшок у цьому віці поповнюється мікромоторними настільними іграми (хокей, футбол, бірюльки, блошки, більбоке тощо).   У процесі оволодіння спортивними іграми (бадмінтоном, кеглями, городками тощо) старші дошкільники розвивають спритність, влучність, витримку, вчаться неухильно дотримуватись правил, гідно програвати.   **Будівельно-конструктивна іграшка**   Для молодших дошкільників необхідні будівельні набори, виготовленні з деревини. Всі елементи повинні бути кратні кубику. Такий набір дозволяє знайомити дитину з різними геометричними формами, що мають еталонне значення. Будівельні набори мають бути укомплектовані достатньою кількістю основних деталей: кубиків, цеглинок, пластин. Їх деталі повинні бути у двох розмірах: маленькі (кубик 4 - 5 см) і великі (кубик 10 см), відповідно, для ігор на столі та підлозі. Для використання конструкцій в сюжетній грі до будівельних наборів додають фігурки людей і тварин. Молодші дошкільники потребують конструкторів з пазовим способом з’єднання деталей (тип „Lego”), виготовлених з пластмаси яскравих кольорів. Розмір деталей повинен бути співрозмірним руці дитини. Деталі мають з’єднуватися без надмірних зусиль і міцно триматися.   Будівельні набори для дітей 5 – 6 років повинні складатися, крім основних деталей, з призм, арок, брусків, циліндрів, сфер, напівсфер. Набори можна доповнити архітектурними прикрасами, фігурками людей, елементами ландшафту. Тематичні будівельні набори доповнюються рамами, балконами, блоками, арками, баштами, колонами. Стосовно художнього вирішення конструктивно-будівельних іграшок слід віддавати перевагу наборам з одноколірними основними деталями, що поєднуються з яскравими декоративними елементами.   У старшому дошкільному віці деталі конструкторів зменшуються за розміром, урізноманітнюються за способом з’єднання. В асортименті іграшок дітей цього віку з’являються гвинтові конструктори, виготовленні з пластмаси та металу.   Для дітей всіх вікових груп важлива якість упаковки конструктивно-будівельних іграшок. Варто віддавати перевагу дерев’яним ящикам, пластмасовим відерцям, що дозволяють зручно зберігати деталі конструкторів та будівельних наборів, привчають дітей до охайності. Для старших дошкільників важливе значення має зміст експлуатаційної документації (інструкції до збирання), що повинна містити способи з’єднання деталей, зразки будівель.   **Театральні іграшки.**   Для молодших дошкільників вихователь повинен мати ляльки-рукавички (бі-ба-бо), пальчикові ляльки, виготовлені з легких матеріалів (пап’є-маше, тканина, хутро). Вимоги до образного вирішення театральних ляльок аналогічні до звичайних ляльок та фігурок. Театральні іграшки для дитячого садка – це іграшки для близького споглядання. Образи мають бути приємними, емоційно привабливими , не лякати дітей (навіть якщо персонаж негативний). Для самостійного використання молодшим дошкільникам пропонують тільки театр іграшок.   До театральних іграшок також відносять елементи костюмів, що зазвичай знаходяться в куточках ряження і мають велике педагогічне значення для формування рольової поведінки дітей.   Для дітей старшого дошкільного віку набори або окремі театральні іграшки відповідають таким же вимогам, що і на попередньому віковому етапі. Старших дошкільників знайомлять з тіньовим театром, а також навчають керувати нескладними ляльками маріонетками та тростинними ляльками. Протягом всього дошкільного віку актуальним є використання театру іграшок та площинного театру відповідно до тематики казок, інших літературних творів. Конструкція іграшки-рукавички для старшого дошкільника повинна забезпечувати зручність використання, відповідно до ергономічних особливостей дитячої руки.   Неприпустимим для дошкільних навчальних закладів є використання іграшок, якість яких не підтверджено відповідною документацією. Насамперед, йдеться про сертифікат відповідності та висновок Державної санітарно-епідеміологічної експертизи. Педагогічну доцільність використання іграшки або навчально-наочного ігрового посібника для дітей певного віку визначає Міжвідомча рада з іграшок та навчально-наочних ігрових посібників при МОН України (далі – Рада). Рада розглядає нові зразки, що впроваджуються у виробництво, забезпечує проведення їх психолого-педагогічної та художньо-технічної експертизи. Документом, який засвідчує якість іграшки, є витяг з протоколу засідання Ради.   Якщо з певних причини немає можливості пересвідчитись у наявності згаданих вище документів, слід звертати увагу на те, що іграшка має супроводжуватися обов’язковими маркувальними даними на етикетці або упаковці (найменування виробника, його реквізити, вікова адресованість). Відсутність цієї інформації, особливо найменування конкретного виробника, - це сигнал тривоги для дорослого, оскільки являє потенційну небезпеку для дитини. Про низьку якість іграшок свідчить неприємний різкий запах, наявність гострих країв, використання неприємних на дотик (липких, жорстких тощо) матеріалів. Проте, навіть за умови використання якісних сучасних матеріалів, наявності необхідних маркувальних даних, категорично забороняється пропонувати дітям дошкільного віку іграшки, що провокують ранні сексуальні прояви, агресивність, цинічне ставлення до загальнолюдських цінностей. Це стосується фігурок „озброєних до зубів” суперменів, детальну імітацію холодної та вогнепальної зброї, настільні та інших видів ігор, в яких купують і подають зброю, фізично знищують умовного противника або ігрового партнера, успіх, перемога

|  |
| --- |
| ТАБЛИЦЯ до листаМіністерства освіти і науки Українивід 27.11.07 № 1/9-470 |

**Іграшки для дітей дошкільного віку з розрахунку на групу дітей**

|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
|

|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
|

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| Назва | Одиниця виміру | Для групи дітей віку | Місце зберігання та використання  |
| молодшого дошкільного  | середнього та старшого дошкільного  | методичний кабінет   |
| ***Ляльки, фігурки тварин та людей*Ляльки**  |
| немовля | шт. | 10 | 2 |   |
| одноліток | - | 5 | 5 |   |
| дорослий | - | 2 | 5 |   |
| літературний персонаж | - |   | 5 |   |
| **М’яконабивні**  |
| тварина | - | 15 | 15 |   |
| літературний персонаж | - | 5 | 10 |   |
| **Фігурки** |   |   | ;  |
| дитина, дорослий | наб. | 10 | 5 |   |
| тварина | - | 20 | 5 |   |
| літературний персонаж | - | 5 | 5 |   |
| ***Предмети лялькового вжитку*Посуд дитячий та ляльковий**  |
| столовий | - | 2 | 1 |   |
| чайний | - | 2 | 1 |   |
| кавовий | - |   | 1 |   |
| кухонний | - | 2 | 1 |   |
| **Меблі для ляльок**  |
| спальня | - | 1 | 1 |   |
| їдальня | - |   | 1 |   |
| вітальня | - |   | 1 |   |
| кухня | - | 1 | 1 |   |
| класна кімната | - |   | 1 |   |
| ванна | - | 1 | 1 |   |
| **Побутова техніка та засоби зв’язку**  |
| телефон | шт. | 4 | 1 |   |
| телевізор | - |   | 1 |   |
| праска | - | 4 | 1 |   |
| холодильник | - |   | 1 |   |
| пральна машина | - |   | 1 |   |
| м’ясорубка | - |   | 1 |   |
| міксер, кавоварка\* | - |   | 1 |   |
| пилосос\* | - |   | 1 |   |
| мікрохвильова піч\* | - |   | 1 |   |
| плити | - | 2 | 1 |   |
| **Лялькова постільна білизна та одяг** |
| постільна білизна | наб. | 3 | 3 |   |
| одяг (сезонний, святковий, професійний) | - | 3 | 5 |   |
| галантерея, біжутерія | - |   | 5 |   |
| **Набори ігрового обладнання та атрибутів для сюжетних ігор** |
| лікарня | - | 1 | 1 |   |
| перукарня | - | 1 | 1 |   |
| школа | - |   | 1 |   |
| дитячий садок, майданчик | - |   | 1 |   |
| магазин | - | 1 | 1 |   |
| пошта | - |   | 1 |   |
| залізниця | - |   | 1 |   |
| ферма | - |   | 1 |   |
| зоопарк | - |   | 1 |   |
| вуличний рух | - |   | 1 |   |
| ательє | - |   | 1 |   |
| пральня | - |   | 1 |   |
| корабель | - |   | 1 |   |
| санки | шт. | 4 | 1 |   |
| коляска | - | 4 | 2 |   |
| гойдалка | - | 2 | 1 |   |
| ***Транспорт, техніка, споруди*Транспорт шосейний** |
| автомобіль легковий | - | 5 | 5 |   |
| автомобіль вантажний | - | 5 | 5 |   |
| автобус | - | 2 | 2 |   |
| тролейбус | - | 2 | 2 |   |
| спеціальний (швидка допомога, пожежна тощо) | - |   |   | 10  |
| **Транспорт колійний**  |
| трамвай\* | - | 2 | 2 |   |
| потяг, електричка\* | - | 2 | 2 |   |
| метро поїзд\* | - |   | 1 |   |
| **Транспорт водний**  |
| пароплав | - | 2 | 2 |   |
| катер | - | 3 | 2 |   |
| човен | - | 3 | 2 |   |
| **Транспорт повітряний**  |
| літак | - | 5 | 2 |   |
| гелікоптер | - |   | 2 |   |
| супутник | - |   | 2 |   |
| космічний корабель | - |   | 2 |   |
| ракета повітряна | - |   | 2 |   |
| повітряна куля | - |   | 1 |   |
| **Техніка будівельна**  |
| екскаватор | - | 2 | 2 |   |
| вантажний кран | - |   | 2 |   |
| бульдозер | - | 2 | 2 |   |
| бетонозмішувач\* | - |   |   | 2  |
| грейдер\* | - |   |   | 2  |
| каток\* | - |   |   | 2  |
| **Техніка сільськогосподарська**  |
| трактор | - | 2 | 2 |   |
| комбайн | - |   | 1 |   |
| сівалка | - |   | 1 |   |
| крупногабаритна іграшкова техніка\* | - | 2 | 3 |   |
| **Споруди**  |
| гараж\* | набір | 2 | 1 |   |
| автопаркінг\* | - |   | 1 |   |
| бензозаправка\* | - |   | 1 |   |
| автоцентр\* | - |   | 1 |   |
| міст\* | - |   | 1 |   |
| зупинка\* | - |   | 1 |   |
| вокзал\* | - |   | 1 |   |
| естакада\* |   |   | 1 |   |
| **Інструмент імітаційний**  |
| молоток | шт. | 2 | 1 |   |
| викрутка | - | 2 | 1 |   |
| лещата | - | 2 | 1 |   |
| гайковий ключ | - | 2 | 1 |   |
| інше | - | 2 | 1 |   |
| ***Іграшки для ігор з піском, водою та снігом***  |
| лопатка, совок, граблі | - | 10 | 10 |   |
| відерце | - | 10 | 10 |   |
| ситечко | - | 10 | 10 |   |
| тачка, возик | - | 2 | 2 |   |
| форми для піску та снігу | набір | 2 | 2 |   |
| набори для дослідів з піском, водою, снігом | - | 2 | 4 |   |
| гідроспоруда: млин, шлюзи, фонтанчики\* | - | 1 | 3 |   |
| ***Настільні ігри***  |
| парні картинки | набір | 3-5 | 3-5 |   |
| розрізні картинки | - | 3-4 | 5-8 |   |
| лото | - | 2-4 | 4 |   |
| кубики з картинками | - | 5-6 | 3 |   |
| доміно | - |   | 3 |   |
| квартет | - |   | 3 |   |
| маршрутні ігри | - |   | 3-6 |   |
| шашкові ігри | - |   | 2 |   |
| шашки | - |   | 1 |   |
| шахи | - |   | 1 |   |
| вікторини\* | - |   | 2-3 |   |
| кросворди\* | - |   | 2 |   |
| головоломки\* | - |   | 3-5 |   |
| ігри-атракціони\* | - |   | 3-4 |   |
| ***Сенсорні іграшки***  |
| піраміди | шт. | 10 | 10 |   |
| втулки | - | 10 | 10 |   |
| іграшки для нанизування, шнурування, втикання, зав’язування, загвинчування | - | 5 | 5 |   |
| ігрові центри з різноманітним руховим, звуковим та світловим оснащенням | - | 5 |   |   |
| ***Спортивно-моторні іграшки*Для розвитку дрібних м’язів рук** |
| міні-більярд | набір |   | 1 |   |
| міні-баскетбол | - |   | 1 |   |
| міні-футбол | - |   | 1 |   |
| міні-городки | - |   | 1 |   |
| міні-хокей | - |   | 1 |   |
| міні-крокет | - |   | 1 |   |
| міні-кеглі | - |   | 1 |   |
| більбоке | - |   | 1 |   |
| бірюльки, блошки | - |   | 1 |   |
| шар в лузу | - |   | 1 |   |
| китайські палички | - |   | 1 |   |
| тири | - |   | 1 |   |
| атракціон з елементами метання та координації рухів | - |   | 1 |   |
| **Для розвитку дихання**  |
| кулька повітряна | шт. | 2 | 2 |   |
| вітрячок та інше | - | 2 | 2 |   |
| **Для розвитку загальних груп м’язів та координації рухів**  |
| сухий басейн | - | 1 | 1 |   |
| гойдалка | - | 1 | 1 |   |
| ходунки | - | 2 |   |   |
| ходулі | - |   | 1 |   |
| каталка (з рухомими деталями на мотузці чи паличці) | - | 10 |   |   |
| м’ячі d=20-25 смd=10-12 смd=6-8 см | -  | 555 | 555 |   |
| м’яч надувний | - | 5 |   |   |
| бадмінтон | набір |   | 3 |   |
| городки | - |   | 3 |   |
| серсо | - |   | 3 |   |
| кільцекид | - |   | 3 |   |
| кеглі | - |   | 3 |   |
| тири | - |   | 1 |   |
| ***Оптичні іграшки***  |
| перископ | шт. |   | 1 |   |
| калейдоскоп, ролейскоп | - | 1 | 1 |   |
| бінокль, підзорна труба | - | 1 | 1 |   |
| стереоскоп | - |   | 1 |   |
| іграшка з оптичним ефектом | - | 1 | 1 |   |
| ***Будівельно-конструктивні іграшки***  |
| великий будівельний матеріал | набір | 1 | 1 |   |
| настільний будівельний матеріал | - | 2 | 3 |   |
| набір кубиків і цеглинок | - | 3 |   |   |
| конструктор великогабаритний універсальний | - | 1 | 1 |   |
| конструктор настільний універсальний:пазовийгвинтовий | -  | 3 | 33 |   |
| тематичний будівельний матеріал | - |   | 2 |   |
| тематичний конструктор з різними способами з’єднання:пазовийгвинтовий | - |   | 22 |   |
| збірно-розбірна іграшка | шт. | 4 | 10 |   |
| ***Театральні іграшки***  |
| театр рукавичок | набір | 1 | 1 |   |
| театр тіньовий | - |   | 3-5 |   |
| театр пальчиковий | - |   | 3 | 3  |
| театр іграшок або площиний | - | 3 | 5 |   |
| театральні ляльки великі | - |   |   | 3  |
| окремі театральні іграшки-маріонетки або тростинні | - |   |   | 3  |
| костюм театральний | шт. |   |   | 10  |
| **Ігрове обладнання для театральних ігор та ігор драматизацій**  |
| театральна ширма | - |   |   | 1  |
| екран для тіньового театру | - |   |   | 1  |
| елементи декорацій та споруд для ігор драматизацій | набір | 2 | 5 |   |
| обладнання для куточка ряження | - | 1 |   |   |

 |

 |

досягаються насильницькими діями.  |

 | http://kyiv-oblosvita.gov.ua/img/singl.gif |
| http://kyiv-oblosvita.gov.ua/img/line_down.jpg |

 |            |
|

|  |
| --- |
|  |

 |
| http://kyiv-oblosvita.gov.ua/img/singl.gif |
|  |

 |